Saathi

Date __/__/__

मृदा के प्रदुषित कर उसके भारीय तत्वो को नष्ट करता है। जिसमे मिट्टी की उर्वरा शक्ति क्षीण हो जाती है।
मिट्टी मे अम्ल की अधिकता के कारण उसमे उपस्थित सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते है। जिनसे कुछ पौधे भी पुर्णतया नष्ट हो जाते है।

मृदा प्रदुषण के कारण →

मृदा प्रदुषण के निम्न कारण है।

(1) दूषित जल और हवा के सम्मिलित प्रयास से मृदा का प्रदुषण होता है।

(2) जब वायु मे सल्फर डाई - आक्साइड (SO_2) वर्षा के साथ मिलकर सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2SO_4) मे बदल जाती है जिससे मिट्टी प्रदुषित हो जाती है।

(3) मरुस्थलीय क्षेत्रो मे हवाएँ एक स्थान से बालू उड़ाकर पास पड़ोस के खेत मे जमा करा देती है। जिससे वह भूमि कृषि के लिए बेकार हो जाती है।

(4) बाढ़ के समय नदी वेग अपने साथ कंकड़ पत्थर बालू व बजरी को आस पास के खेती मे जमा कर देती है। जिससे उस खेत की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

(5) अत्याधिक जनसंख्या के भोजन की पूर्ति के लिए रसायनिक उर्वरको के उपयोग द्वारा अधिक अन्न उत्पन्न करने से कुछ समय के उपरान्त उस खेत की मिट्टी अन उपजाऊ हो जाती है।

Page No.

पालिथीन के बढते प्रयोग के दुष्परिणाम

पालिथीन एक ऐसा संघटक है जो कि कभी भी पूर्णरूपेण चक्रित नही किया जा सकता जिससे यह अपने स्वरूप मे इस पृथ्वी पर बना रहता है इसके बढते हुए प्रयोग से पालिथीन का जो कचड़ा तैयार होता है वह कचडे से मिलकर उनकी पुनः चक्रित होने की प्रक्रिया मे बाधा उतपन्न करता है इसका मुख्य प्रभाव मृदा प्रदुषण के रूप मे सामने उभर कर सकता है जिससे धीरे धीरे भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है

प्र॰→ ध्वनि प्रदुषण उसके स्त्रोत एवं उनके निदान के उपाय →

उ॰→ ध्वनि या आवाज पैदा करना मानव तथा जीवधारियो का स्वाभाविक गुण है ध्वनि या आवाज के द्वारा ही हम अपने विचारों का आदान प्रदान करते है किन्तु अनावश्यक असुविधाजनक तथा अनुपयोगी अवाज को ध्वनि प्रदुषण कहा जाता है जब अवाज सीमा से अधिक तीव्र हो जाती है और जिसे कान सुनने के लिए तैयार नही वह ध्वनि प्रदुषण के अन्तर्गत आती है

ध्वनि प्रदुषण के स्त्रोत → ध्वनि के शोरगुल प्रदुषण दो प्रकार के होते है प्राकृतिक स्त्रोतो द्वारा तथा मानवीय क्रियाओ द्वारा —

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया